लाइट बन, परमात्मा की लाइट माइट में लवलीन हो जायें

- गतांक से आगे...

परमधाम में भी वैरायटी रूप है। अब आप सोचेंगे कि परमधाम तो है ही एक, तो वैरायटी रूप कैसे है? तो पहला जो स्वरूप है बाबा हमेशा कहते हैं मुरली में कि बच्चे लाइट हाऊस बनकर बैठो, मैं आत्मा प्रकाश स्वरूप हूँ और लाइट हाऊस बनकर बैठेंगे तो हल्की फीलिंग आयेगी एकदम, हल्कापन हो जायेगा। जैसे शरीर का भान समाप्त हुआ, मैं बिन्दु बनकर परमधाम में जा रही हूँ। तो बिन्दु का वेट कितना होगा, एकदम लाइट और उसमें भी लाइट स्वरूप, लाइट स्वरूप में अपने आपको देखते हैं और बाबा भी जैसे लाइट हाऊस है। तो बाबा की सकाश लाइट के रूप में मुझे प्राप्त हो रही है और मैं आत्मा अन्दर से एकदम हल्कापन महसूस करती जा रही हूँ। उस लाइट से ही जो ज्वाला प्रज्वलित होती है, बीजस्वरूप बाबा है तो उस शक्ति से या उस लाइट की किरणें जैसे-जैसे मेरे पास आ रही हैं तो सोचो सूर्य की लाइट कैसे आती है? सूर्य की लाइट की तरह बाबा की भी वो पॉवरफुल लाइट की किरणें आ रही हैं और मैं आत्मा बिल्कुल हल्की होती जा रही हूँ। मेरे विकर्म, अनेक जन्मों के जो संस्कार हैं, अनेक जन्मों के संस्कारों के आधार पर किए हुए कर्म हैं जिसका मुझपर बोझ महसूस हो रहा है वो जैसे हल्का होने लगता है। और जैसे-जैसे वो हल्का होता गया तो आत्मा एकदम अन्दर से लाइट होती जा रही है। बाबा जब साकार में थे तो कितना अभ्यास किया हुआ था ये दादियां हमें सुनाती थीं। बाबा ने रात-रात जागकर जैसे मैं एक लाइट का पुंज हूँ का अभ्यास किया। तो बाबा जब चल करके जाते थे तो ऐसा लगता था जैसे एक हवा का झोंका चला गया। ऐसा फील होता था। बाबा के बॉडी का जैसे वज़न ही नहीं है ऐसे ही महसूस होता था। क्योंकि आत्मा इतनी लाइट हो गई थी तो बॉडी भी ऐसा ही हो रहा था कि उस समय बाबा के सामने जाकर अगर खड़े भी होते थे तो लगता बाबा के जैसे नयनों से, मस्तक से लाइट की किरणें आ रही हैं और हम उसी में जैसे भरपूर होते जा रहे हैं। बाबा कुछ बोले, कहे ये भी नहीं होता था। तो इस तरह से फीलिंग आना कि जैसे सूर्य के सामने खड़े हो गए और शक्ति प्राप्त हो रही है इतनी लाइट की किरणें मिल रही हैं।

पहला स्वरूप परमधाम का और दूसरा स्वरूप जो परमधाम का है वो है माइट स्वरूप। शक्ति स्वरूप। कि मैं आत्मा शक्ति स्वरूप हूँ। सर्वशक्तिवान बाबा की शक्तियां मुझे प्राप्त हो

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

रही हैं लेकिन कैसे मिल रही हैं तो वो दृश्य ऐसा है कि जैसे शक्तियों की छत्रछाया में हैं। पहले में लाइट प्राप्त हो रही है सूर्य की तरह और दूसरे में जैसे बाबा ऊपर और हम आत्मायें नीचे और बाबा की शक्तियों की किरणों की छत्रछाया में मैं जैसे अपने आपको देखती हूँ। बहुत सुन्दर फीलिंग आयेगी इसमें भी, और ऐसे महसूस होगा जैसे बाबा की शक्ति से मेरे विकर्म समाप्त हो रहे हैं, दग्ध हो रहे हैं, जल रहे हैं और मैं एकदम शक्तिस्वरूप। बहुत सुन्दर बाबा का एक गीत है कि अनन्त किरणों की बाहों में बाबा ने जैसे हमें ले लिया है। अनन्त किरणें, लेकिन एक-एक किरणें जो बाबा की हैं वो भी सर्वशक्तियों से जैसे भरपूर हैं। और उन सर्वशक्तियों की किरणों में, किरणों की बाहों में बाबा ने मुझ आत्मा को जैसे समा लिया है। जिसके लिए बाबा कहते हैं कि भक्तों ने कहा आत्मा परमात्मा में लीन हो गई। लीन हो जाने का मतलब था मग्न हो जाना। और साथ ही साथ जैसे उस स्वरूप में समा जाना, खो जाना। बाबा की अनन्त किरणों की बाहों में जब हम समा जाते हैं, खो जाते हैं तो जैसे लवलीन आत्मा बन गई।

एक अव्यक्त मुरली में बाबा ने कहा कि एक तो जैसे लवली आत्मा और एक है लवलीन आत्मा। तो लवलीन जब हम हो जाते हैं तो बाबा की अनन्त किरणों की बाहों में, परमधाम में बाबा ने जैसे मुझे समा लिया और उसमें मैं खो जाती हूँ और मग्न हो जाती हूँ। जिसको ही लीन अवस्था कहा गया। ऐसे नहीं कि फिज़िकली समा जाती है। बस इतना याद में और उन शक्तियों में जैसे हम मर्ज हो जाते हैं, समा जाते हैं। तो इसीलिए भक्तों ने जब साक्षात्कार किया तो उन्हें ये महसूस होने लगा कि ये तो जैसे मिल गये हैं, समा गये हैं उसके अन्दर, लेकिन वास्तव में ये हमारी उस बिन्दु स्वरूप की अवस्था है। और इतनी शक्तिशाली स्थिति माइट हाऊस बन जाते हैं। स्वयं जैसे सशक्त हो जाते हैं ऐसी फीलिंग में हम अपने आपको महसूस करते हैं और जैसे और कुछ नहीं लेकिन इस स्वरूप में खोये रहो, समाये रहो। और बस उसका आनन्द अनुभव करते रहो। क्योंकि ये आनन्ददायी स्थिति है।

- क्रमशः

ये जीवन है.....

जीवन में यदि हमें अपने लक्ष्य या मंज़िल पर पहुंचना है तो मार्ग के कांटों से मत घबराना, क्योंकि कांटे ही तो बढ़ा देते हैं हमारी जीवन रूपी मार्ग के रफ्तार रूपी कदमों को... और अगर अपने कदमों को कांटों के भय से रोक लिया तो वह अपनी मंज़िल को कदापि नहीं पा सकता। उसे बाधायें बार-बार रोकती रहेंगी और वह जीवन में दुःख पाता रहेगा।

ख्यालों के आईने में...

कोई अगर आपके अच्छे कार्य पर संदेह करता है तो करने देना, क्योंकि शक सदा सोने की शुद्धता पर किया जाता है, कोयले की कालिख पर नहीं।

जब किसी में गुण दिखाई दे, तो मन को कैमरा बना लीजिए और जब किसी में अवगुण दिखाई दे तो मन को आईना बना लीजिए।

टूण्डला-रामनगर। नवरात्रि पर्व पर आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए कैबिनेट मंत्री एस.पी. सिंह बघेल, डिग्री कॉलेज के प्रबंधक बाबुराम यादव तथा ब्र.कु. विजय बहन।

दिल्ली-मजलिस पार्क। विजय दशमी के उपलक्ष्य में आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन पश्चात् चित्र में प्रसिद्ध उद्योगपति राजेन्द्र मलिक, ब्र.कु. राजकुमारी, ब्र.कु. शारदा तथा अन्य।

ओमशान्ति मीडिया का मोबाइल एप्प गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध है। आप क्यू.आर. कोड स्कैन करके डाउनलोड करें एवं लाभ उठायें।

Available on the Android App Store

https://play.google.com/store/apps/details?id=app.bk.osm.OmShantiMedia

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये, आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)

कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।